हिमाचल प्रदेश के शंकुधारी वृक्ष

शंकुधारी पौधे वृक्ष या झाड़ी के रुप में पाये जाते हैं। यह पौधों के प्रारम्भिक वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। नर तथा मादा फूल शंकु के रुप में होते हैं। मादा शंकु में बीज अण्डाशय में बन्द नहीं होते। शंकुधारी पौधों की पत्तियां सूई या शल्क–पत्र समान होती हैं। हिमाचल प्रदेश के रमणीक प्राकृतिक दृश्यों की विशिष्ट पहचान शंकु वृक्षों की 14 प्रजातियों की उपस्थिति से है जिसमें वैभव युक्त देवदार, फैले हुए चीड़, शूर सरु, ऊँचे व शानदार रई व तोष और सुगंधित जूनिपर आदि प्रजातियां हैं। इन सभी शंकुधारी पौधों की प्रजातियां अलग–अलग ऊँचाईयों पर पाई जाती हैं (रेखा चित्र देखें)। किसी भी क्षेत्र में शंकुवृक्ष की प्रजाति को देखने मात्र से ही हम उस क्षेत्र की ऊँचाई का अनुमान लगा सकते हैं।

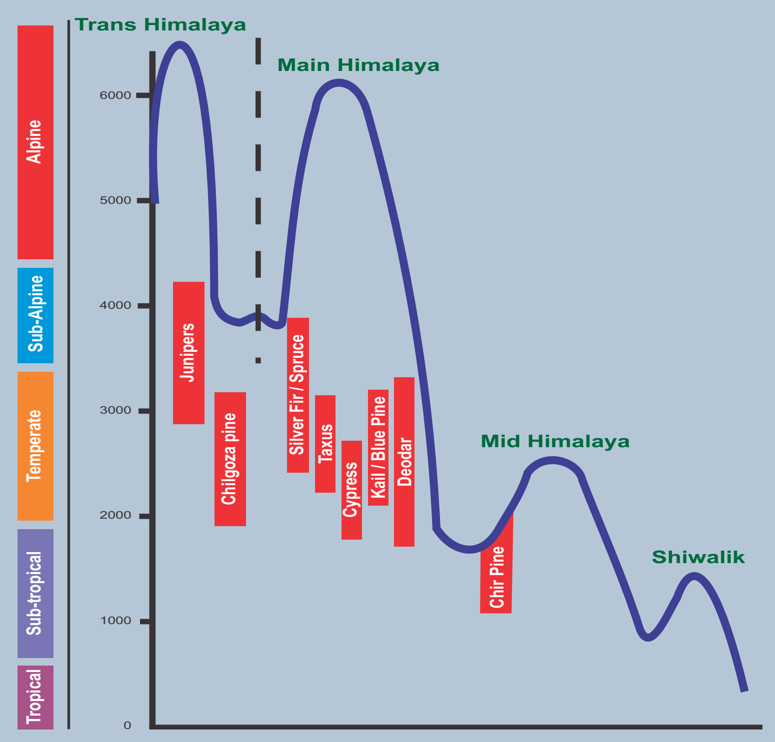

हिमाचल प्रदेश में शंकुधारी वृक्षों का ऊंचाई अनुसार वितरण

देवदार/केलो (*Cedrus deodara*)

हिमाचल प्रदेश का 'राज्य वृक्ष' देवदार, अपनी क्षितिज के समानांतर टहनियों, गहरी हरी व छोटी सूई समान पत्तियों के समूह से बहुत सरलता से पहचाना जा सकता है। देवताओं के वृक्ष के रूप में अपनी पहचान रखने वाला यह वृक्ष आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है, जिसकी इमारती लकड़ी का ऊँचा व्यवसायिक मूल्य है। इसकी लकड़ी से प्राप्त तेल का प्रयोग इत्र निर्माण तथा अनेक औषधियों के संघटक के तौर पर किया जाता है।

देवी–दयार/सरू (*Cupressus torulosa*)

यह एक पिरामिडनुमा वृक्ष है, जो सामान्यतः चूने के पत्थरों वाले स्थानों पर पाया जाता है। इसके त्रिकोणीय, छोटे, शल्क–पत्रा समान पत्ते तथा गोल शंकुफल (कोन) होते हैं। इस वृक्ष की लकड़ी को मुख्यतः धार्मिक समारोहों में सुगंध के लिए प्रयोग किया जाता है।

रखाल/थुना/बिरमी (*Taxus wallichiana= Taxus baccata*)

छाया पसंद यह वृक्ष बहुत ऊँचाई वाले शंकुधारी तथा चौड़ी पत्तियों वाले वृक्षों के छत्र के नीचे पाया जाता है। इसकी छाल पतली, मुलायम, लाल–भूरी, तथा पत्तियां गहरी हरी, समतल सूई समान होती हैं। इसके फल गूदेदार, लाल व खाने योग्य होते हैं। इसकी पत्तियों मे कैंसर रोधी रसायन पाया जाता है। स्थानीय लोग इसकी छाल तथा पत्तियों का चाय में इस्तेमाल करते हैं।

रई/स्प्रूस (*Picea smithiana*)

यह अधिक ऊँचाई पर पाया जाने वाला विशाल वृक्ष है। जिसकी झूलती हुई टहनियां, घुमावदार व छोटी, गहरी हरी सूई–समान पत्तियां इसकी खास पहचान है। इसके फल गहरे भूरे रंग के शंकु के आकार के होते हैं। इसकी लकड़ी का प्रयोग निर्माण कार्य, लुगदी बनाने तथा घरों की आन्तरिक सजावट के लिए किया जाता है।

पाईन वृक्ष

इन वृक्षों की पत्तियां लम्बी व सूई समान नुकीली होती हैं, इन के फल स्पष्ट रुप से दिखने वाले शंकु होते हैं। हिमाचल प्रदेश में पाईन वृक्ष की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं।

चीड़ (*Pinus roxburghii*)

यह निचली ऊँचाई पर पाया जाने वाला वृक्ष है। इसकी छाल मोटी, दरार–युक्त व मगरमच्छ की खाल जैसी होती है। इसकी लम्बी सूई समान पत्तियां तीन के समूह में पाई जाती हैं जो इसकी मुख्य पहचान है। इस वृक्ष से व्यवसायिक इमारती लकड़ी तथा बिरोजा प्राप्त होता है।

कैल (*Pinus wallichiana*)

मध्यम ऊँचाई पर पाये जाने वाले इस वृक्ष से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है। इसकी लम्बी सूई समान पत्तियां नीले–हरे रंग तथा पांच के समूह में पाई जाती हैं। झूलते हुए शंकुफलों (कोन) के द्वारा इसे आसानी से पहचाना जा सकता है।

चिलगोज़ा (*Pinus gerardiana*)

यह शुष्क, भीतरी हिमालय में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसकी पतियां छोटी, तीन के समूह में सूई–समान न मुड़ने वाली व गहरे हरे रंग की होती हैं। इसकी छाल पतली तथा मुलायम होती है जो परतों में निकलती है। इस वृक्ष से हमें पौष्टिक, स्वादिष्ट न्योज़े/ चिलगोज़े (बीज) प्राप्त होते हैं।

तोश/फर

हिमाचल प्रदेश में फ़र की दो प्रजातियां हैं।

तोश/पश्चिमी हिमालयन सिल्वर फ़र (*Abies pindrow*)

यह अधिक ऊँचाई पर पाया जाने वाला विशाल वृक्ष है। इसकी नवोदित सूई समान पत्तियां पीले हरे रंग की, टहनियों के छोर पर स्थित होती हैं। पूर्ण विकसित पत्तियां लम्बी, समतल तथा हल्के हरे रंग की होती हैं। इसके शंकुफल (कोन) जामुनी हरे तथा लम्बवत होते हैं। इसकी नर्म लकड़ी लुगदी, निर्माण व गृह सज्जा आदि में उपयोगी है।

कलोंता/पश्चिमी हिमालयन हाई लेवल सिल्वर फ़र (*Abies spectabilis*)

इस प्रजाति के वृक्ष अंतिम वृक्ष रेखा (ट्री लाइन) के साथ–साथ पाये जाते है। यह तोश जैसा ही दिखाई देता है परंतु इसकी विशेष पहचान चक्राकार ढंग से लगी गहरे हरे रंग की सूई समान छोटी पत्तियां होती है, जिनकी निचली सतह पर दो चांदी समान सफेद रेखायें होती हैं।

जुनिपर

अधिक ऊँचाई वाले शुष्क क्षेत्रों में धीमी गति से बढ़ने वाले यह सुगंधित पौधे वृक्ष/झाड़ी के रुप में पाये जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में जुनिपर की 5 प्रजातियां (एक वृक्ष तथा चार झाड़ीयाँ) पायी जाती हैं।

शुर/शुरगु (*Juniperus macropoda=J polycarpos*)

यह छोटा वृक्ष भीतरी हिमालय के अधिक ऊँचाई वाले शुष्क लाहौल व किन्नौर जिलों में पाया जाता है। इसकी छाल पतली, लाल–भूरी तथा रेशेदार होती है। पत्तियां शल्कपत्रा जैसी तथा सुगंध के लिए जलायी जाती हैं। लकड़ी का प्रयोग निर्माण कार्य तथा ईधंन के लिए किया जाता है।

बिथर/ठेलू (*Juniperus indica*)

एक छोटी फैली हुई झाड़ी है, जिसकी पत्तियां शल्कपत्रा समान होती हैं व धूप के रूप में जलाई जाती हैं।

बिथर/दामा् (*Juniperus communis*)

एक छोटी फैली हुई झाड़ी के रुप में पाया जाता है। जिसकी लकड़ी का ईधंन के तौर पर प्रयोग किया जाता है। पत्तियां नुकीली होती हैं तथा धूप के रूप में प्रयोग की जाती हैं। कच्चे फलों (हाउबेर) से निकाला गया तेल, 'जिन' (एक किस्म की शराब) को स्वादिष्ट बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

बिथर (*Juniperus recurva*)

एक छोटी व विस्तृत झाड़ी के रुप में पायी जाती है। पत्तियां नाव के आकार की होती हैं जिन्हें सुगंध हेतु प्रयोग किया जाता है। लकड़ी ईंधन के तौर पर प्रयुक्त होती है।

बिथर/छटे–पिटे (*Juniperus sqaumata*)

एक छोटी सी झाड़ी जिसकी पत्तियां धूप के तौर पर प्रयोग की जाती हैं। लकड़ी ईंधन के लिए प्रयोग होती है तथा जलाने पर पटाखों जैसी ध्वनि उत्पन्न करती है।

वन विभाग–हिमाचल प्रदेश

Text & Pictures: *Dr. GS Goraya*

प्रचार वन मंडल–शिमला

Design & Layout: Satish Gupta